महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

मौनधारा (मून्दडी), कपिष्ठल (कैथल), हरियाणा

(हरियाणा सरकार के अधिनियम २०/२०१८ द्वारा संस्थापित एवं यू.जी.सी. की धारा २(एफ) के अन्तर्गत मान्यता प्राप्त)

महर्षि–प्रभा

मासिक ई–पत्रिका

अंक–१६

सितम्बर २०२३

विक्रमी संवत् २०७९–८०

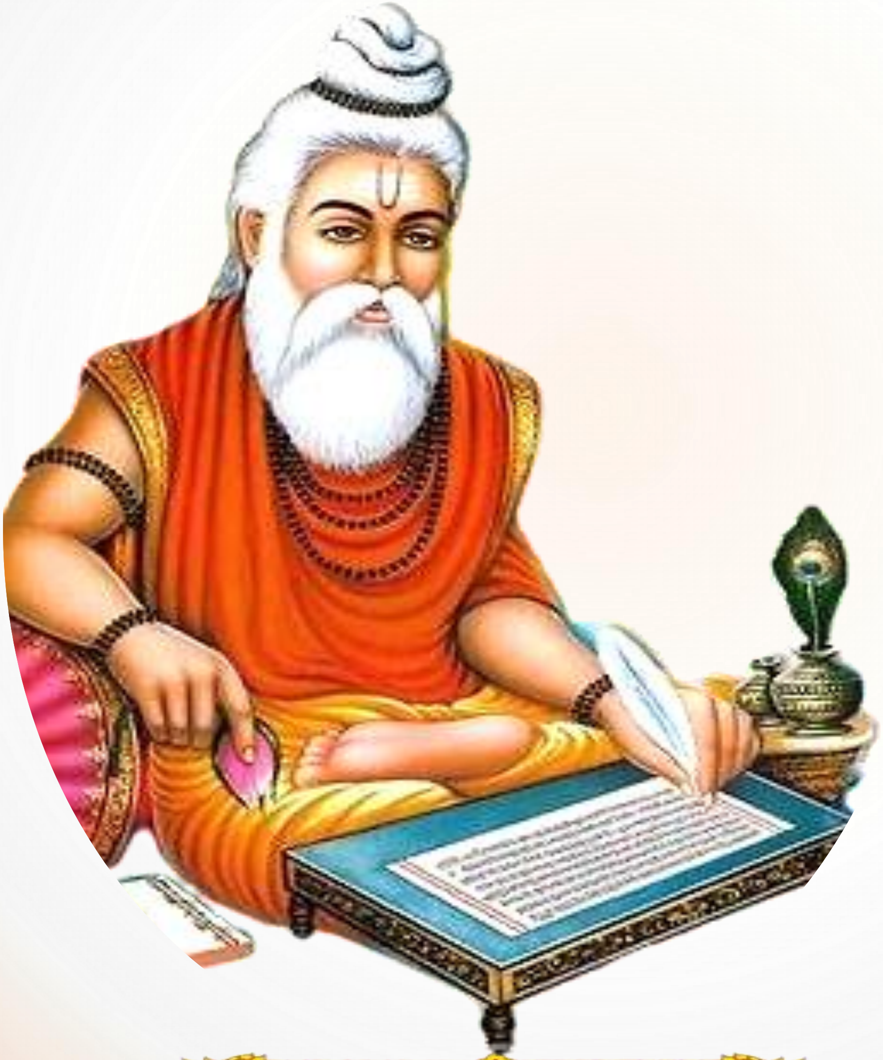

संरक्षक

श्री बंडारु दत्तात्रेय
(महामहिम राज्यपाल)

श्री मनोहरलाल खट्टर
(मुख्यमंत्री हरियाणा)

श्री मूलचन्द शर्मा
(माननीय उच्च शिक्षा मंत्री)

मार्गदर्शक

प्रो. रमेश चन्द्र भारद्वाज
(कुलपति)

प्रो. बृज पाल
(कुलसचिव)

सम्पादक

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे

सहसम्पादक

डॉ. अखिलेश कुमार मिश्र
डॉ. शर्मिला
डॉ. गोविन्द वल्लभ

कवीन्द्रं नौमि वाल्मीकिं यस्य रामायणी कथाम् ।
चन्द्रिकामिव चिन्वन्ति चकोरा इव साधवः ॥

कुलपतेः संदेशः

संस्कृतभाषा केवलं भाषामात्रेव नास्ति अपितु भारतीयसंस्कृतेरात्मा अस्ति । नैतिकमूल्यानां जननी चापि अस्ति । संस्काराणां मूलं इयमेव भाषा अस्ति । ज्ञान-विज्ञानस्य स्त्रोतरस्ति । विश्वस्य समस्तानां भाषाणां जननी अपि संस्कृतमेव मन्यते ।

संस्कृतिसन्दर्भे आदि कालादेव धर्म-अर्थ काम-मोक्ष इति पुरुषार्थचतुष्टस्य साधिका, ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ आश्रमेषु मानवसमाजस्य नानाघटकेषु रीति-नीति-परम्परासु आध्यात्मिकसांस्कृतिक-सामाजिकभावनासु योऽपि विकासः कृतः स समग्ररुपेण मूलतः संस्कृतभाषयैव अस्ति । वर्तमान परिप्रेक्ष्ये स्व-अस्मितासंरक्षणार्थं सांस्कृतिकमूल्यानां रक्षणार्थं च संस्कृतमेव आधारो अस्ति । वैदिक शिक्षायाः 'सहनाववतु सहनौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै' इत्येषा भावना अद्येत्वे अपि विश्वकल्याणाय विद्यते ।

भौतिक चाचक्येनान्धीभूतस्य नरस्य नेत्रोन्मीलनाय संस्कृतशिक्षणं महनीयम् । संस्कृते ऐहलौकिकं पारलौकिकञ्च ज्ञानं कल्याणकरं विभूतिप्रपञ्च विद्यते । अस्माकं संस्कृते त्यागभावना, परोपकारपरायणता आध्यात्मिकसाधना-समन्वयभावना-सहिष्णुता-कर्मनिष्ठता विश्वबन्धुत्वादि जीवनोपयोगितत्त्वानां संवाहिका संस्कृतभाषां एवास्ति । विश्वकल्याणस्य उदारपरिकल्पनायाः श्रेयस्करः सन्देशः 'सर्वेभवन्तु सुखिनः' अपि अस्यामेव सुनिहितः वर्तते । अतः विश्वकल्याणाय अपि संस्कृतमावश्यकमस्ति ।

भारतीय समस्तभाषाणां जीवनदायिनीशक्तिः संस्कृतेव अस्ति भारतीय भाषाणां संरक्षणाय अपि संस्कृतमावश्यकमस्ति ।

भाषाणां भारतीयानां मूलमेकं हि संस्कृतम् ।
मूललोपे च शारवेव सा सर्वाशोषमेष्यति ।।

कुलपतिः
महर्षिवाल्मीकिसंस्कृतविश्वविद्यालयः

सम्पादकीयम्

विश्वेऽस्मिन् सर्वे शान्तिमिच्छन्ति । परं शान्तिः कीदृशी इत्यस्य ज्ञानं न । शान्तिः त्रिधा भवति । व्यक्तिगत शान्तिः । राष्ट्रस्य शान्ति । विश्ववस्य शान्ति । व्यक्तिगत वयं पश्चामः यत् जनाः बहुविधक्रियाकलापङ्करोति शान्तिः प्राप्त्यर्थे परं शान्तिः न लभते । वास्तविकशान्तिः कुत्र लभते नैव जानन्ति । सः भौतिक जीवने शान्तिः कामयते । भौतिक पदार्थेषु शान्ति न मिलति । यतोहि शान्तिस्तु अन्तः स्फूर्तक्रिया अस्ति ।

राष्ट्रस्य शान्तिः जागतिकशान्तिश्च राज्यादिकारिणः माध्यमेनैव संभवति । युद्धं शान्तिश्च तेषां इच्छया एव निर्भरमस्ति । वयं जानीमः महाभारतस्य भीषणयुद्धं दुर्योधनस्य दुराग्रहकारणादेव अभवत् । तस्य दुराग्रहस्य समक्षे सर्वेषां शान्तेः प्रयासाः व्यर्थाः जाता ।

वैयक्तिक शान्तिः मानवस्य स्वकीय अन्तः करणे स्थापिता भवति । अन्तःकरणस्य शान्तिः वाह्य भौतिकपदार्थेषु कदापि न संभवति । तस्य कृते योगसाधना आवश्यककी वर्तते । योगसाधना तत्रैव भवति यत्र धर्मरक्षणं यत्र सुभिक्षं धार्मिकं राज्यं भवति । वर्तमान सन्दर्भे धर्मस्य या परिभाषा क्रियते तत् धर्मं न । अस्य अभिप्रायो वर्तते यत् नैतिकमूल्ययुक्तं राज्यम् यत्र सर्वे स्व-स्व कर्मणि निरता भवेयुः । यत्र धर्माचरणं कुर्वन् स्वकर्मणि निरताः जनाः सन्ति । तत्र स्वभाविकी शान्तिर्भवति । मानव जीवने वास्तविकं आनन्दं भवति । योगसाधनामाध्यमेन तस्य अन्तःकरणे आनन्दोस्फुरति । यत्र योगसाधना न संभवति तत्र शान्तिः अपि न सम्भाव्यते ।

अस्माकं ऋषः सर्वत्र शान्तेः कामना कर्वन्ति त्रिवारं शान्तिः शान्तिः शान्तिः इत्येषा अभिप्रायो अपि इदमेवास्ति । मानव जीवने शान्तिः राष्ट्रशान्ति विश्वेशान्तिः ।

भारतं आध्यात्मयुक्तराष्ट्रं वर्तते अतः एव अत्र मनसः परिष्कारं कुर्वन्तः जनाः आत्मिकशान्तिं लभन्ते । भारतीयजीवनदर्शनं शान्ते रक्षणं करोति । सैव विश्वशान्तेः स्थापना कर्तुम् शक्यते ।

सम्पादकः

प्रश्न है कथम् पश्येम? विश्व को देखने की दो प्रकार की दृष्टि है। एक मित्र की दृष्टि और दूसरी शत्रु की दृष्टि।

भारतीय दृष्टि विश्व को मित्र की दृष्टि से देखने की है। इसीलिए यजुर्वेद का ऋषि कहता है - मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे। संसार को मित्र की दृष्टि से देखें। यह मित्र उपदेश नही है यह युगों के अनुभव की वाणी है। जितना तुम दूसरों से प्रेम करोगे जुडते जाओगे। जितना द्वेष करोगे उतना ही दूर होता जाओगे। जहां प्रेम है वहां सुख है, आनन्द है और जहां द्वेष है वहां दुःख है अशान्ति है।

मित्र की दृष्टि से देखने पर सभी आपके साथ में आ जाते हैं। इसीलिए वेद कहता है कि संसार को सदैव मित्र की दृष्टि से देखें। इसी दृष्टिकोण से देखने के कारण भारत ने समग्र विश्व को एक परिवार मानकर प्रेम किया है।

वसुधैव कुटुम्बकम् की हमारी दृष्टि मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे के कारण निर्मित हुई। सबके कल्याण का भाव जाग्रत हुआ। ***सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः, सर्वे भद्राणि पश्यन्तु, मा कश्चित् दुःखभाग्भवेत्*** का भाव इसी से निर्माण हुआ।

हमने प्रेम को ही ईश्वर की पूजा माना है। प्राणिमात्र से प्रेम ही ईश्वर की पूजा है। प्रेम से बड़े- बड़े शत्रुओं को भी वश में किया जा सकता है। प्रेम कठिन से कठिन कार्य को भी आसान बना देता है। जर्मन विद्वान गेटे कहता है कि परिश्रम से जो काम सारी उम्र में कठिनाई से होता है, प्रेम के द्वारा वह कार्य क्षणभर में हो जाता है। ग्रेगरी कहता है कि समस्त ज्ञान की उत्पत्ति प्रेम से होती है।

मित्र की आँख का अर्थ है प्रेम की आँख और अमित्र की दृष्टि का अर्थ है द्वेषपूर्ण दृष्टि। मित्र दृष्टि धरती पर स्वर्ग का निर्माण करती है अमित्र की दृष्टि धरती को नर्क बना देती है। मित्रस्य चक्षुषा और अमित्रस्य चक्षुषा दोनो के उदाहरण महाभारत में मिल जाते हैं। द्रुपद की द्रोण के प्रति अमित्र दृष्टि से महाभारत के भीषण विभीषिका का उदय हुआ। दूसरी ओर कृष्ण की सुदामा के प्रति मित्र दृष्टि का परिणाम आज भी हमारे लिए अनुकरणीय है।

मावन को मानव बनाने की दृष्टि ही प्रेम दृष्टि है अर्थात् मित्र की दृष्टि है। अमित्र दृष्टि मानव को पशुत्व की ओर ले जाती है। प्रेम ही जीवन का उत्स है वही मानव का गन्तव्य है।

ईसा ने जब यह का कि अपने शत्रु से प्रेम करो तो लोगों ने उसका उपहास किया। बुद्ध ने जब यह घोषणा की कि अक्रोधेन क्रोधं जयेत्। तो लोगों ने उनका उपहास किया। प्रेम से ही सत्य की उत्पत्ति होती है। प्रेम और सत्य के अभाव में कोई जी नही सकता। जब वह प्रेम से विमुख हो जाएगा तो नरक में भटकता रहेगा।

तुम किसी को शत्रु की दृष्टि से देख सकते हो, उससे बदला ले सकते हो, उसे हानि पहुँचा सकते हो परन्तु उससे तुम्हें सुख प्राप्त नही हो सकता। आनन्द की प्राप्ति नही हो सकती। दूसरों से द्रोह करना आत्मद्रोह करना ही है। ईर्ष्या द्वेष तथा घृणा के अन्धकार से धरा नरक बनती जा रही है। प्रतिस्पर्धा की होड ने मनुष्य को अमित्र चक्षुषी बना दिया है।मित्रस्य चक्षुषा के भारतीय ऋषि प्रदत्त श्रेष्ठ सिद्धांत से मानव दूर होता जा रहा है। पाश्चात्य जगत की एकाकी जीवन शैली का विकृत रूप संपूर्ण विश्व को पशुता की ओर ले जा रहा है। भौतिक सुख सुविधाओं की होड में मानव की मित्र दृष्टि शत्रु दृष्टि में बदलती जा रही है।

हमे अपने के द्वार खोलकर अपने ऋषि का मन्त्र मित्रस्य चक्षुषा समीक्षामहे का स्मरण करने की आवश्यकता है। मित्र की दृष्टि होने से किसी का कोई विरोधी नहीं रहता। हम प्रतिदिन प्रातः उठकर अपने ऋषियों का स्मरण करें और संकल्प लें कि हमारी दृष्टि मित्र दृष्टि होगी।प्रतिदिन कोई मित्र अवश्य बनाएं।

डॉ. कृष्ण चन्द्र पाण्डे
(विभागाध्यक्ष-हिन्दू अध्ययन)

संस्कृत लेखन कौशल संवर्धन कार्यशाला

(दिनांक 01, 02 और 04 सितम्बर)

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय कैथल के अस्थाई परिसर में संस्कृत दिवस के उपलक्ष्य में दिनांक 01, 02 और 03 सितम्बर को विविध कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। प्रत्येक वर्ष श्रावणी पूर्णिमा से तीन दिवस पूर्व और तीन दिवस पश्चात् के सप्ताह को संस्कृत सप्ताह के रूप में मनाया जाता है। 01 सितम्बर (शुक्रवार) को कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. रमेशचन्द्र भारद्वाज जी ने अपने उद्बोधन में शिक्षकों एवं विद्यार्थियों को ***'सहनाववतु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवावहै'*** की भावना के साथ संस्कृत विश्वविद्यालय में संस्कृतमय वातावरण बनाने हेतु प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम के कार्यशाला में प्रशिक्षक के रूप पंजाब विश्वविद्यालय चण्डीगढ़ के अनुसन्धाता श्री गुरजीत सिंह (संस्कृत विभाग) ने संस्कृत लेखन कौशल संवर्धन हेतु प्रशिक्षण दिया।

संस्कृत लेखन कार्यशाला में 80 एवं निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में 65 विद्यार्थियों ने भाग लिया

संस्कृत लेखन कौशल संवर्धन कार्यशाला के द्वितीय दिवस (शनिवार) को आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ. सुरेन्द्र पाल, डॉ. जगत नारायण, सत्राध्यक्ष डॉ. नरेश शर्मा, मंच संचालक संयोजक डॉ नवीन शर्मा जी रहे। द्वितीय दिवस भी प्रशिक्षक श्री गुरजीत सिंह (पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़) ने छात्रों को प्रशिक्षण दिया। कार्यशाला में संस्कृत व्याकरण का संस्कृत लेखन में उपयोग कैसे किया जाए तथा किन किन महत्वपूर्ण बिन्दुओं एवं सूत्रों पर ध्यान देने की आवश्यकता होती है। कार्यशाला में विद्यार्थियों से प्रायोगिक अभ्यास भी करवाया गया। प्रथम सत्र में सत्राध्यक्ष के रूप में डॉ. नरेश शर्मा (विभागाध्यक्ष-ज्योतिष विभाग), द्वितीय प्रशिक्षण सत्र में सत्राध्यक्ष के रूप में डॉ. रामानन्द मिश्र (सहायक आचार्य-साहित्य) तथा संचालक डॉ. सत्येन्द्र (सहायक आचार्य-धर्मशास्त्र) रहे। इसके उपरान्त डॉ. नरेश शर्मा के संयोजकत्व में ***संस्कृत निबन्ध लेखन प्रतियोगिता*** आयोजन किया जिसमें 65 प्रतिभागियों ने भाग लिया।

दिनांक 04 सितम्बर को संस्कृत शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया गया। जिसमें हरियाणा के विद्यालयों में अध्यापन कर रहे अनेक संस्कृत शिक्षकों ने भाग लिया। कार्यक्रम में मुख्यातिथि पूर्व-प्राचार्य (सेवानिवृत्त) संस्कृत शिक्षक श्री रमेश कुमार शर्मा तथा अतिथि महन्त रमनपुरी जी महाराज जी उपस्थित रहे। इस अवसर पर संस्कृत संरक्षण मंच के अध्यक्ष ईश्वरदत्त भारद्वाज, गीता मनीषी हरिदेव शास्त्री, जय भगवान शास्त्री, सुनील आत्रेय, सुरेश शास्त्री, कृष्ण चन्द्र शास्त्री, डॉ राजेश, डॉ बबीता, डॉ ज्योति लता, सुनीता, आदि लगभग 50 शिक्षकों ने भाग लिया।

कुलपति प्रो. रमेश भारद्वाज ने संस्कृत शिक्षकों को सम्बोधित करते हुए कहा कि महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय आप सभी के अथक प्रयासों से उन्नति करता आ रहा है क्योंकि आपके द्वारा पढ़ाए हुए बच्चे ही विश्वविद्यालय में प्रवेश लेते हैं। समाज में भी आप संस्कृत विश्वविद्यालय में पढ़ने हेतु सभी को प्रेरित करते हैं। सभी शिक्षकों को अपने विश्वविद्यालय में देखकर कुलपति अतीव हर्षित हुए उन्होंने कहा संस्कृत क्षेत्र में आ रही समस्याएं हम सभी पूरे परिवार की समस्याएं हैं। हमें मिलकर उन समस्याओं का समाधान ढूंढने की आवश्यकता है।

संस्कृत सप्ताह के उपलक्ष्य में 02 सितम्बर को आयोजित संस्कृत निबन्ध लेखन प्रतियोगिता में वेद विभाग से **शालिनी प्रथम**, दीक्षा द्वितीय, अंजली तृतीय, ज्योतिष विभाग से **अभिषेक प्रथम**, अंकेश द्वितीय, रविन्द्र तृतीय, व्याकरण विभाग से **भारती प्रथम**, रामदास द्वितीय, मंजू तृतीय, साहित्य विभाग से **शीतल प्रथम**, परमजीत द्वितीय, मनीषा तृतीय, धर्मशास्त्र विभाग से **निकिता प्रथम**, निशा द्वितीय, कोमल तृतीय, दर्शन विभाग से **सोनू देवी प्रथम**, मनीषा द्वितीय, आसीन खान तृतीय, योग विभाग से **पूनम प्रथम**, पूनम कुमारी द्वितीय, गायत्री तृतीय, हिन्दू अध्ययन विभाग से **रजनी प्रथम**, रामराजी द्वितीय, प्रवेश कुमार तृतीय स्थान प्राप्त किए।

कार्यक्रम को सफल बनाने में आयोजन समिति के अध्यक्ष डॉ सुरेन्द्रपाल, संयोजक डॉ. नवीन शर्मा (सहायकाचार्य- ज्योतिष), सह-संयोजक डॉ. देवेन्द्र सिंह (सहायकाचार्य-योग), विश्वविद्यालय के सभी संकायाध्यक्ष, विभागाध्यक्ष, अधिकारियों, कर्मचारियों तथा विद्यार्थियों ने पूर्ण सहयोग किया।

ऑनलाइन माध्यम से अकेडमिक बैंक क्रेडिट सिस्टम (ABC SYSTEM) की कार्यशाला का आयोजन

महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय एवं डिजीटल इंडिया के संयुक्त तत्त्वावधान में **अकेडमिक बैंक क्रेडिट सिस्टम** से सम्बन्धित कार्यशाला में **इलैक्ट्रानिक् एवं सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय, भारत सरकार** के **डिजिटल इंडिया को-ऑपरेशन** से **असिस्टेंट मैनेजर श्री शुभम शर्मा** ऑनलाइन माध्यम से विश्वविद्यालय के अधिकारियों, प्राध्यापकों, कर्मचारियों एवं छात्रों को डिजिटल लॉकर में अकाउंट बनाने तथा उपयोग से संबधित आई. डी. के प्रयोग का प्रशिक्षण देते हुए।

ऑनलाइन माध्यम से सम्बोधन करते माननीय प्रधानमंत्री

26 सितम्बर 2023 G-20 के संदर्भ में भारतमण्डल से सभी विश्वविद्यालयों के कुलपतियों, शिक्षको एवं छात्रों के साथ माननीय प्रधानमंत्री जी ऑनलाईन माध्यम से संवाद करते हुए।

विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित शहीद भगत सिंह जयन्ती कार्यक्रम

28 सितम्बर 2023 को विश्वविद्यालय के टीक परिसर में **सरदार भगत सिंह जयन्ती** के अवसर पर मुख्य वक्ता आरकेएसडी महाविद्यालय से इतिहास विभाग से सेवानिवृत्त आचार्य **प्रो. बृज बिहारी भारद्वाज**, कार्यक्रम के संयोजक शैक्षणिक अधिष्ठाता प्रो. भाग सिंह बोदला सहित विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्ष, आचार्य, शोधच्छात्र एवं विद्यार्थी सम्मिलित रहे।

मेरा गाँव नैना

गाँव का इतिहास- नैना गाँव भारत के हरियाणा में कैथल जिले में स्थित है। यह कैथल से 15 किमी दूर स्थित है, जो नैना गांव का जिला और उप-जिला मुख्यालय दोनों है। गाँव का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 642 हेक्टेयर है। नैना गांव का इतिहास बेहद गौरवपूर्ण है। नैना एक प्राचीन गांव है जहां वीरता से सम्मानित रक्षा कर्मी और शहीद हुए हैं। नैना के निवासियों का मुख्य व्यवसाय कृषि है।

जन सांख्यिकी- नैना गांव कैथल तहसील में स्थित है, 2023 में नैना की आबादी 4,148 होने का अनुमान है, 2011 में आखिरी जनगणना के अनुसार, इस गांव में 3400 लोग रहते हैं, इनमें से 1811 पुरुष और 1589 महिलाएं हैं। नैना की जनसंख्या 2022 में 3,808 निवासी है। साक्षर लोग 2017 हैं जिनमें से 1239 पुरुष और 778 महिलाएं हैं। नैना में रहने वाले लोग कई कौशलों पर निर्भर हैं, कुल श्रमिक 1024 हैं जिनमें से पुरुष 837 और महिलाएं 187 हैं।

कृषि - गाँव की संस्कृति कृषि पर आधारित है। गाँव के पास कुल 4500 एकड़ कृषि योग्य भूमि है। लगभग 427 किसान कृषि पर निर्भर हैं, जिनमें से लगभग 342 खेती पुरुषों द्वारा की जाती है और लगभग 85 महिलाएं हैं। नैना में लगभग 220 लोग कृषि भूमि पर मजदूरी करते हैं, इनमें लगभग पुरुष 179 और 41 महिलाएं हैं। अधिकांश लोग अपने जीवन-यापन के लिए खेती करते है। वे विभिन्न प्रकार की फसलें उगाते है। जिनमें से दो प्रमुख उगाई जाने वाली फसलें गेंहू और चावल है। गाँव में गाय, भैंस आदि दुधारू पशुओं का पालन किया जाता है।

शिक्षा – हमारा गाँव कैथल जिले से लगभग 16 कि.मी. की दुरी पर स्थित है। गाँव में दो राजकीय उच्चतर माध्यमिक विद्यालय हैं, जो लड़के और लड़कीयों के लिए अलग-अलग हैं। आस-पास के कई गाँवों के विद्यार्थी नैना गाँव में अध्ययन हेतु आते हैं। गाँव शहर के समीप होने के कारण विद्यार्थियों को स्नातक, स्नात्तकोतर, तकनीकि एवं अन्य शिक्षा ग्रहण करने के लिए निम्न स्थान हैं-

विश्वविद्यालय/महाविद्यालय

1. महर्षि वाल्मीकि संस्कृत विश्वविद्यालय, कैथल- वर्ष 2018 में हरियाणा सरकार द्वारा स्थापित हरियाणा राज्य का प्रथम संस्कृत विश्वविद्यालय है जिसका निर्माण कार्य हमारे गाँव से मात्र 4 कि.मी. की दूरी पर स्थित गाँव मून्दड़ी में चल रहा है और एक अन्य अस्थाई परिसर गाँव टीक के समीप कुरुक्षेत्र मार्ग पर स्थित पूर्व सरस्वती तकनीकि महाविद्यालय, में स्थित है जिसमें आचार्य, शास्त्री एवं डिप्लोमां की कक्षाएं लगती है। यह परिसर हमारे गाँव से मात्र 7 कि.मी. की दूरी पर स्थित है। वर्तमान में विश्वविद्यालय में लगभग 1500 विद्यार्थी व्याकरण, साहित्य, ज्योतिष, वेद, धर्मशास्त्र, हिन्दू अध्ययन, योग एवं कर्मकाण्ड विषयों में अध्ययनरत हैं।
2. NIILM विश्वविद्यालय कैथल के अम्बाला मार्ग पर आदर्श गाँव क्योडक के समीप है जो हमारे गाँव से 16 कि. मी. दूर है। इस विश्वविद्यालय में Animation & Design, Arts Humanities & Social Science, Commerce, Computer Application & IT, Engineering & Architecture, Hospitality & Tourism, LAW, Media-Mass Communication & Journalism इत्यादि कोर्स हैं।
3. डॉ. भीम राव राजकीय महाविद्यालय, राजकीय प्रौद्योगिकीय महाविद्यालय (शेरगढ़), इन्दिरा गाँधी स्नात्तकोतर महिला महाविद्यालय (कैथल), RKSD स्नात्तकोतर महाविद्यालय (कैथल), जाट कॉलेज, (कैथल), श्री राम कॉलेज ऑफ ऐजयूकेशन, कैथल इत्यादि हैं।

तीर्थ एवं धार्मिक स्थल- नैना के ग्रामीण अत्यंत धार्मिक हैं। वे पूजा और प्रार्थना में नियमित समय लगाते हैं। जिसका प्रमाण गाँव में स्थित धार्मिक स्थल हैं। जिसमें बाबा खैर नाथ समाधी स्थल (स्थापना 1922), संत बाबा मोनी जी महाराज की आभा में आदर्श और गौरक्षा दल गौशाला (स्थापना 2014-15), श्रीकृष्ण मंदिर (आदर्श और गौरक्षा दल गौशाला निर्माण 2016- 2019), माता शेरावाली मंदिर, बसंती माता व फलुमदे माता मंदिर, संतोषी माता मंदिर, काली माता मंदिर, शिव मंदिर, हनुमान मंदिर, धन्ना भगत मंदिर, गुरू गोरख नाथ मंदिर, जाहर वीर गोगा मंदिर, आंचल पुरी मंदिर, विश्वकर्मा मंदिर, आसन मंदिर, गिरि मंदिर, संत रविदास मंदिर, महर्षि वाल्मीकि मंदिर।

पर्यावरण और वन्य जीवन - गांव में जल की निकासी के लिए आधुनिक योजना बनाई गई है गाँव के पूर्व की ओर बारिश के पानी को निकालने के लिए एक नाला भी है। गांव के पश्चिम की और छोटे-छोटे वृक्षो के साथ एक विशाल तालाब भी है। बत्तख, भारतीय गोरैया, कौआ, मधुमक्खियाँ, और कई वन्यजीव हैं।

प्रधानमंत्री ने स्वच्छता में सहभागिता पर किया सम्मानित- स्वच्छता अभियान को सार्थक बनाते हुए गांव नैना की ग्राम पंचायत के साथ युवाओं ने गांव को जिला में सबसे स्वच्छ गांव बनाया है। स्वच्छता अभियान के तहत गांव की सरपंच सुमन देवी को गत 10 मार्च को गुजरात में स्वच्छता में सहभागिता को लेकर हुए समारोह में प्रधानमंत्री ने प्रंशसा पत्र देकर सम्मानित किया है। साथ ही युवाओं के प्रयास के बाद ग्रामीणों न गांव में पॉलिथीन को ना कही है। यहां न तो कोई पॉलिथीन में सामान को लेता है और न ही लेने देता है। गांव के युवा स्वच्छता अभियान के तहत बिना जातिय भेदभाव के प्रत्येक रविवार प्रातः जल्दी उठकर गांव को पूर्ण रुप से स्वच्छ करते हैं। ग्राम पंचायत एवं गाँव के युवाओं के अथक प्रयासों से शौच मुक्त अभियान चलाया तथा सभी सदस्यों ने निजी कोष से 10 शौचालय बनवाए है।

सार्वजनिक सुविधाएं - गाँव में स्वास्थ्य केन्द्र, पशु चिकित्सा केन्द्र, अनाज मंडी, बिजली घर, खेल स्टेडियम, धर्मशाला, डाकघर, बैंक और ए.टी.एम. उपलब्ध है। गाँव में सामुदायिक कृषि बैंक व तीन पैट्रोल पंप भी उपलब्ध है। इन सार्वजनिक सुविधाओं का प्रत्येक ग्रामीण को लाभ मिल रहा है।

मनीषा, गुरनाम सिंह , अंजू रानी (आचार्य साहित्य)

'यतो धर्मस्ततो जय:'

मानवेन य उन्नतिकारक: कल्याणकारकश्च संकल्पो धार्यते, स धर्म: कथ्यते। यथा वैशेषिकदर्शने कथिता 'यतोऽभ्युदयनि: श्रेयसमिद्धि: स धर्म:'। मनसि सत्कर्म कर्तुं यो विचारो ध्रियते, स धर्म: कथ्यते। यथा-

धारणाद् धर्म इत्याहु: धर्मो धारयते प्रजा:।
य: स्याद् धारणसंयुक्त: स धर्म इति निश्चय:॥

(महाभारतम्)

धर्म एव प्रजां धारयति। प्रजाकार्यं धर्माधारेण भवति। यो धारणक्रियायुक्त: स धर्म:। संसारनियामकतत्त्वं कथ्यते। महर्षि पतञ्जलिना योगदर्शनं यमशब्देन धर्मस्य व्याख्या कृत्ता-

अहिंसासत्यास्तेयब्रह्मचर्याऽपरिग्रहा यमा:।

(योगदर्शनम्)

मीमांसादर्शनकारेण जैमिनिमुनिना धर्मलक्षणं निर्दिष्टम्–

चोदनालक्षणोऽर्थो धर्म:।

(मीमांसादर्शनम्)

वैशेषिकदर्शनकारेण कणादमुनिना धर्मस्य प्रतिपादने कथितं यद् येन कर्मणा लौकिकी पारलौकिकी चोन्नतिर्भवति, स धर्म:।

यथा मनुना लिखितम्-

धृति: क्षमा दमोस्तेयं शौचमिन्द्रियनिग्रह:।
धीर्विद्या सत्यक्रोधो दशकं धर्मलक्षणम्॥

धर्म एव जीवनसार:। पशव: पक्षिणाश्चऽऽहारनिद्रादिकर्म सम्पादनेन स्वजीवनं सफलं मन्यन्ते। किन्तु मनुष्यजीवनमाहारविहारर्थमेव नास्ति। अपितु तत्किमपि विशेषमुद्देश्यं पुरयितुं भवति।

अधर्मेणैधते तावत्ततो भद्राणि पश्यति।
तत: सपत्नाञ्जयति समूलस्तु विनश्यति॥

पुरुषार्थचतुष्टये धर्म: प्रथमस्थाने तिष्ठति। धर्मं बिना मानवजीवनस्य निस्तारो न भवति। यो धर्मं न चालयति, तस्य मनोऽशान्तिं प्राप्नोति। यो धर्मं पालयति, तस्य कल्याणं भवति, तस्य पक्षे जयो भवति। अत एव कथ्यते।

'यतोधर्मस्ततो जय:'

रजनी
एम. ए. हिन्दू अध्ययन

ईमान हिन्दुस्तान का

कुछ खरीदा है, कुछ बेचा है,
न बिकेगा ईमान मेरा।
प्रयास बहुत हुआ निचे झुकाने का,
कुछ लुटेरों से जहाज भरा॥

कुछ गम गुटके,
कुछ दफन हुए ह्रदय की वादियों में।
वो भगत सिंह, वो राजगुरु,
ना हारे जाँ की बाजियों में॥

तेईस मार्च सन तेईस था,
चूमा फँदा फाँसी का।
वो काली घनी रात्रि थी,
सूर्य की किरणों में॥

कुछ लाश बिछी, कुछ सनी हुई थी।
हिन्दुस्तान के रक्त और माटी में॥

सन् सैंतालिस अगस्त पन्द्रह,
आजाद हुआ वतन मेरा।
उफान बन बह गया हिन्दुस्तान का हर कतरा,
जालिमों की वादियों में॥

अत्याचार किए,
फिरंगी मुगलों ने।
नहीं टूटी हिम्मत,
काट दिया सर तेरा॥

पाला था भ्रम तुने,
वहम ही था बस तेरा।
कुछ खरीदा है, कुछ बेचा है,
न बिकेगा ईमान मेरा... न बिकेगा ईमान मेरा...

शीतल देवी
एम. ए. हिन्दू अध्ययन

प्रश्नमञ्जरी

(१) 'आरोग्य मंजरी' के लेखक हैं ?
(क) वाणभट्ट (ख) नागार्जुन (ग) गोविन्दाचार्य (घ) सोमदेव।
(२) सृष्टि में जीवन के विकास क्रम का वर्णन किस ग्रन्थ में हैं-
(क) श्री विष्णु पुराण (ख) श्रीमद्वागवत पुराण (ग) आयुर्वेद (घ) कामसूत्र
(३) 'कपिलगीता' किस ग्रन्थ के अन्तर्गत है-
(क) हरिवंश पुराण (ख) रामायण (ग) महाभारत (घ) भागवत।
(४) 'शरीर रक्षा' का ज्ञान किस विद्या के अन्तर्गत है -
(क)आयुर्वेद (ख) यजुर्वेद (ग) धर्मसूत्र (घ) शब्द विद्या
(४) 'मालविकाग्निमित्रम्' नाटक के प्रेरणा हैं-
(क) भारवि (ख) मास (ग) कालिदास (घ) मल्लिनाथ
(६) कौटिल्य अर्थशास्त्र अधिकरणों में विभक्त है-
(क) 14 (ख) 20 (ग) 16 (घ) 15
(७) ज्योतिषशास्त्र के विश्वविख्यात ग्रन्थ आर्यभट्टीयम् का दूसरा नाम है-
(क) आर्यभट्ट प्रकाश (ख) आर्य सिद्धान्त (ग) आर्यसद्वाव (घ) ग्रहलाघव
(८) आर्षेय ब्राह्मण किस वेद सम्बन्धित है ?
(क) ऋग्वेद (ख) यजुर्वेद (ग) सामवेद (घ) अथर्ववेद
(९) 'कपिलगीता' में 'कपिल' ने किसे उपदेश दिया -
(क) पुत्र (ख) माता (ग) पिता (घ) मित्र
(१०) जैनमतानुसार श्रीकृष्ण को तीर्थंकर नेमिनाथ का क्या माना जाता है
(क) मित्र (ख) बन्धु (ग) गुरु (घ) शिष्य

(उत्तराणि अग्रिमे अङ्के)

(पंचदशङ्कस्य उत्तराणि)

(1) संजीवनी विद्या (2) 27 (3) 700 (4) राक्षस (5) 13 (6) 04
(7) आदि पुराण (8) जिनसेन (9) शुल्व सूत्रों में (10) स्वामी भारती कृष्णतीर्थ

सुभाषितानि

प्रियवाक्यप्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।
तस्मात्तदेव वक्तव्यं वचने का दरिद्रता॥

प्रिय वचन बोलने से सभी प्राणी प्रसन्न होते हैं। अतः प्रिय वचन ही बोलना चाहिए। प्रिय वचन बोलने में दरिद्रता (कमी) क्यों व्यक्त की जाये।

यान्ति न्यायप्रवृत्तस्य तिर्येचोऽपि सहायताम्।
अपन्थानं तु गच्छन्तं सोदरोऽपि विमुञ्चति॥

न्याय मार्ग पर चलने वाले के पशुपक्षी भी सहायक हो जाते हैं। अनीति के मार्ग पर चलने वाले का साथ सहोदर भाई भी छोड़ देता है।

विद्वत्त्वं च नृपत्त्वं च नैव तुल्यं कदायन।
स्वदेशे पूज्यते राजा विद्वान् सर्वत्र पूज्यते॥

विद्वता और नृपता में कभी बराबरी नहीं की जा सकती है। राजा अपने शासन क्षेत्र (राज्य) में सम्मानित होता है किन्तु विद्वान् सर्वत्र सम्मानित होता है।

चन्द्रयान-III

चाँद तुम्हारे दामन पर, विक्रम ने रखा चरण।
पूरा हुआ इसरो का ऐतिहासिक चन्द्र मिशन॥

दक्षिण ध्रुव पर पहुँच चाँद के,भारत बना नम्बर वन।
बिखेरो लाल-गुलाल, मनाओ धूम-धाम से जश्न॥

पहुँचे थे मंगल पर, अब कर लिया चाँद विजय।
लहर खुशी की भारत में, लैंडिंग कर लिया चन्द्रयान॥

प्रीति देवी
आचार्य साहित्य (द्वितीय वर्ष)

संस्कृतभाषागौरवम्

सरला मधुरा रमणीया
संस्कृतभाषा पठनीया।

सुरवाणी या विद्वद्भाषा
जनवाणी सा करणीया।

परिष्कृता सा शब्दरूपिणी
महाकविभ्यो ग्रहणीयो।

दिव्यतमापि च सुलभतमा या
सैव जननी कथनीया।

अतिपुरातनी तदपि नवीना
गृहे गृहे तु गमनीया।

रम्यमनोहरशब्दयुता सा
विनाप्रयासं पठनीया।

संगणकेनापि गृहीताभाषा
युगभाषा सा करणीया।

रामराजी
हिन्दू अध्ययन (द्वितीय वर्ष)